कलारंग

अरुणा की कहानी में निहित करूणा

रवीन्द्र त्रिपाठी

कुछ दुर्घटनाएं व्यक्तिगत होती हैं लेकिन उनके भीतर बहुत बड़ा सामाजिक मंतव्य निहित होता है। अरुणा शानबाग का मामला कुछ ऐसा ही है। इसी साल यानी मई 2015 में अरुणा शानबाग का निधन हुआ। पर ये निधन सामान्य वाकया नहीं था। इसमें बहुत कुछ असामान्य था। इसी असामान्य को रंगनिर्देशक अरविंद गौड़ के निर्देशन में हुए नाटक `अरुणाज स्टोरी' में पिछले हफ्ते इंडिया हैबिटेट सेंटर हुई एक प्रस्तुति में रेखांकित किया गया। वरिष्ठ अभिनेत्री लुशिन दूबे ने अपने एकल अभिनय से अरुणा की त्रासदी के विविध पक्षों को जिस तरह उभारा वो भी समकालीन भारतीय रंगमंच की बहुत बड़ी घटना है। एक बड़ी त्रासदी और बेजोड़ अभिनय। एक अविस्मरणीय नाटक। अरविंद और लूशिन की टीम का कमाल। नाटक मुख्यरूप से द्विभाषी था- यानी अंग्रेजी और हिंदी दोनों में।

पर पहले थोड़ा अरुणा शानबाग के मसले पर फिर याद कर लें। कन्नड़ मूल की और 1948 में जन्मीं अरुणा रामचंद्र शानबाग किंग एडवर्ड मेमोरियल अस्पताल में नर्स थीं और 1973 में इसी अस्पताल के एक कर्मचारी ने उनके गुदा-बलात्कार किया था। इस बलात्कार के वक्त अरुणा के गले को कुत्ते के लिए इस्तेमाल किए जानेवाले चेन से बांध दिया गया था जिसके कारण अरुणा ऐसी स्थिति में आ गईं कि सुधबुध खो बैठे । उनकी चेतना भी चली गई और दृष्टि भी। और वे हमेशा के लिए बिस्तर पर पड़ गई। 42 साल तक वे इसी स्थिति में रहीं और अस्पताल की नर्सों ने उनकी देखभाल और सेवा की। 2011 में पत्रकार, लेखिका और मानवाधिकार एक्टिविस्ट पिंकी विरानी ने सर्वोच्च न्यायालय में अरुणा के लिए इच्छा मृत्यु या यूथनेसिया की याचिका लगाई। सर्वोच्च न्यायालय ने विरानी की याचिका को अस्वीकार कर दिया पर निष्क्रिय इच्छामृत्यु यानी पैसिव यूथनेसिया के लिए स्वीकृति दी। इस तरह अरुणा का जीवन, अगर उसे जीवन कहा जाए तो, एक मानवीय कानून का आधार बना। नाटक `अरुणाज स्टोरी' अरुणा शानबाग की जिंदगी और मौत की इन्हीं विडंबनाओं को सामने लाता है। नाटक मोटे तौर पिंकी विरानी की किताब पर आधारित है पर इसकी अपनी स्वायत्तता भी है। एक जटिल और उलझावों से भरी कहानी को नाटक में जिस तरह पेश किया गया उसमें दर्द की दास्तान भी है और सोच के कई विंदु भी।

बतौर नाटक `अरुणाज स्टोरी' अरुणा शानबाग की गाथा को आदि-मध्य-अंत की पारंपरिक पद्धति में सामने नहीं लाता बल्कि उन पहलुओं को उजागर करता है जो इस पूरे प्रकरण से जुड़े हुए हैं और हिंसा, विशेषकर स्त्री के खिलाफ हिंसा, को लेकर समाज के अलग अलग वर्गों की सोच की पड़ताल करता है। वो कौन सा ज्वार है जो बलात्कार की तरफ प्रवृत्त करता है, किसी का बलात्कार हो जाने पर पुलिस क्या करती है, साथी कर्मचारियों का क्या नजरिया होता है- ऐसे तमाम पक्ष उभरते हैं।

कानूनी मसले कैसे नए पेच पैदा करते हैं ये भी इस नाटक में आता है। जिस शख्स ने अरुणा का गुदा-बलात्कार किया था उस पर बलात्कार का मुकदमा भी नहीं चला। उसे सात साल की सजा हुई लेकिन अरुणा पर प्रहार और डकैती के जुर्म में। बलात्कार के मामले में सजा इसलिए नहीं हुई कि उसकी कोई शिकायत नहीं की गई थीं। शिकायत क्यों नहीं की गई इसकी वजह ये बताई जाती है कि अस्पताल का प्रशासन ये नहीं चाहता था कि अगर अरुणा की हालत ठीक हो जाए तो वो बलात्कार की शिकार के ठप्पे के साथ अपनी बाकी जिदगी गुजारे। ये माना जाता है कि अरुणा का अस्पताल के एक डॉक्टर के साथ प्रेम संबंध भी था। नाटक में अरुणा से संबंधित ये सारे प्रसंग आते हैं। एक कोमल और सरल जिंदगी को क्रूरता ने किस तरह नष्ट कर दिया, `अरुणाज स्टोरी' इसका आख्यान है।

इतनी जटिल कहानी को एकल अभिनय से सामने लाना एक बहुत बड़ी चुनौती है और इसमें कोई संदेह नहीं कि लुशिन दूबे ने पूरी दक्षता के इसे निभाया। एक मानसिक स्थिति से दूसरी मानसिक स्थिति में जाना और दूसरी से तीसरी में और ये सिलसिला चलते जाना - किसी भी अभिनेता को बहुत दुष्कर काम है। इसके लिए न सिर्फ पर्याप्त ऊर्जा चाहिए बल्कि वो बौद्धिक गहराई भी चाहिए जो घटनाओं और चरित्रों का बारीक विश्लेषण कर सके और दर्शकों तक सहजता के साथ संप्रेषित कर सके। उस पीड़ा को सामने ला सके जो अरुणा ने झेली थी और उन तमाम प्रसगों की याद दिला सके जो अरुणा शानबाग से जुड़े हुए हैं। ये नाटक न सिर्फ रंगमंच प्रेमियों को बल्कि अभिनय की आकांक्षा रखनेवाले सभी रंगकर्मियों को देखनी चाहिए जिससे वे समझ सकें कि अभिनय कैसी गहरी बौद्धिक तैयारी की मांग करता है। ये कहने में कोई संकोच नही होना चाहिए कि दिल्ली रंगमंच पर लूशिन दूबे जैसी कोई अभिनेत्री नहीं है जो जटिलता के रेशे रेशे को इस तरह उद्घाटित कर दे कि लगे कि सब कुछ सहज अनुभूत हो।

नाटक का स्टेज डिजाइन भी उपयुक्त और कल्पनाशील होने के साथ कथ्य के पेचोखम को जतानेवाला था। धातु की बल्लियों से मंच को कई हिस्सों में विभाजित किया था और उसमें छोटे छोटे स्पेस बनाए गए थे। पर ये सब सिर्फ शैली के लिए नहीं था बल्कि उस नर्क का भी एहसास कराता था जिसमें अरुणा रही। निर्देशक अरविंद गौड़ ने एक करुण और पेचीदा कहानी को जिस कौशल से पेश किया वो भी उनके निर्देशकीय कल्पनाशीलता का साक्ष्य है। दूसरे निर्देशकों के लिए एक चैलेंज।